P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

परम्परागत और आधुनिक छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

दिलीप कुमार झा
प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
प्रज्ञा कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
बहादुरगढ़, हरियाणा

सारांश

भारत गॉवों का देश है। सामान्य रूप से देखा गया है कि शहरी विद्यालयों के बालकों में सृजनात्मकता के विकास के लिए कुछ अवसर उपलब्ध हैं। परन्तु सुदूर के ग्रामीण अंचलों के विद्यालयों में उनके लिए उपयुक्त सुविधा उपलब्ध नहीं है। जिस प्रकार एक स्वास्थ पौधे के लिए शुद्ध बीज के साथ–साथ उपयुक्त मिट्टी एवं जलवायु की आवश्यकता होती है उसी प्रकार बालक के सृजनात्मकता विकास के लिए योग्य अध्यापक, उपर्युक्त पाठ्यक्रम एवं उत्तम शिक्षण विधि आदि आवश्यक है।

मुख्य शब्द : सृजनात्मकता, शैक्षिक आकांक्षा, परम्परागत और आधुनिक विद्यालय, छात्र एवं छात्राएँ।

प्रस्तावना

जब बालक विद्यालय में आते हैं तो उनके हृदयों में अपार उमंगे और असीम रोमांच होते हैं। उनकी दृष्टियाँ सदैव शिक्षक पर लगी रहती है। प्रायः कुछ सप्ताहों या महिनों के उपरांत उनकी आँखों में जिज्ञासा का प्रकाश बुझ जाता है। उनके लिए पढ़ाई, रचनात्मक कार्य करना एक समस्या बन जाती है। वे विद्यालय की चारदीवारी तथा घण्टियों की सीमाओं में एक जैसा नीरस जीवन व्यतीत करते हैं। यहॉ सब बालकों के लिए एक ही प्रकार का मापदण्ड होता है जो उनके स्वयं के व्यक्तित्व को उनकी पूरी विविधता के साथ निखरने नहीं देता है। दूसरी तरफ आज के युग में विभिन्न देशों के अंतर्गत नए आविष्कार हो रहे हैं। इसमें वैज्ञानिकों का अथक परिश्रम छुपा हुआ है, साथ ही उनकी सृजनात्मकता का बड़ा योगदान होता है। सृजनात्मकता सभी में कम अधिक मात्रा में पाई जाती है। सृजनात्मकता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विद्वत्तापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने तथा विचार करने में समर्थ बनाती है। प्रचलित ढंग से हटकर किसी नए ढंग से चिंतित करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनात्मकता है। सृजनात्मक बालक की पहचान उसके गुणों के आधार पर की जा सकती है। सृजनात्मक बालक में धाराप्रवाह, मौलिकता, आत्मानुशासन, दृढ़निश्चय, उत्साह जैसे गुण पाए जाते हैं। यदि शिक्षा के क्षेत्र में सृजनशील बालकों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मापन करके हम उनकी सृजनात्मक क्षमता को पहचान कर उसी के अनुरूप शिक्षण व्यवस्था करें, भविष्य में तभी राष्ट्र की संस्कृति, वैज्ञानिक व तकनीकी समृद्धि संभव है।

आधुनिक कला एवं साहित्य दर्शन एवं धर्म, विज्ञान एवं तकनीकी, उद्योग एवं वाणिज्य, यातायात एवं संचार, कृषि एवं सामाजिक संस्थाओं में हुई चकाचौंध पैदा कर देने वाली उन्नति एवं प्रगति का श्रेय मानवीय प्रतिभां एवं सृजनशीलता को जाता है। वह व्यक्ति जो कि मानवीय प्रयत्नों के क्षेत्र में सृजनशीलता से संपन्न है। उन्हें उच्चादर की दृष्टि से देखा जाता है। तथा वे उच्च पद एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करते हैं। शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य सृजनात्मकता की योग्यता और प्रतिभा का विकास करना है। इसलिए अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह सृजनात्मकता के स्वरूप सृजनात्मकता से संबंधित स्तरों एवं सृजनात्मकता के विकास की विधियों को समझें।

वैज्ञानिक तकनीकी तथा औद्योगिक विकास के आधुनिक युग में विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत नित्य प्रतिदिन नूतन आविष्कार हो रहे हैं। इनमें से अधिकांश आविष्कारों के पीछे जहां वैज्ञानिकों का अथक परिश्रम छिपा है, वहीं उनकी सृजनात्मक सोच का भी योगदान कम नहीं है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मक अभिव्यक्ति हो सकती है। वास्तव में संसार के समस्त प्राणियों

में संरचनात्मकता पाई जाती है। किसी में कम मात्रा में सृजनात्मकता होती है, तथा किसी में अधिक मात्रा में। मानवीय जीवन को सुखमय बनाने के लिए नवीन आविष्कार करने तथा समस्याओं का समाधान खोजने कार्य में सृजनात्मकता अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरांत सृजनात्मकता के प्रत्यय पर मनोवैज्ञानिकों व शिक्षाशास्त्रियों ने विशेष ध्यान दिया। वर्तमान समय में तीव्र गति से हो रहे वैज्ञानिक तकनीकी की प्रगति तथा औद्योगिक विकास के आधुनिकीकरण ने मानव जीवन को इतना जटिल तथा समस्याग्रस्त बना दिया है कि इन समस्याओं के समाधान के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। आज के समस्याग्रस्त जटिल समाज तथा प्रतियोगिता पूर्ण संसार में सृजनात्मक व्यक्तियों की अत्यंत मांग है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियों को अधिकाधिक अर्जित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सृजनात्मक व्यक्तियों को खोजना एक राष्ट्रीय आवश्यकता बन गई है

भारतीय दर्शन के अनुसार हम सर्वशक्तिमान परमात्मा के अंश है इसीलिए हम सब में सृजनात्मक योग्यता विद्यमान हैं। किसी में उच्च स्तर के सृजनात्मकता होती है। तो किसी में निम्न स्तर की। किन्हीं व्यक्तियों में सृजनशीलता का गुण प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। जो अमूल्य निधि है। जिस पर प्रगति, उन्नति तथा उत्थान निर्भर करता है सृजनशील व्यक्ति प्रत्येक युग एंव प्रत्येक काल में पाये जाते हैं सृजनशीलता वैसे तो प्रत्येक प्राणी में पायी जाती है लेकिन मनुष्य में यह सर्वाधिक पायी जाती है। क्योंकि मानव एक बुद्धिमान प्राणी माना गया है। प्रत्येक व्यक्ति में सृजनशीलता समान रूप से नहीं पायी जाती है। यहाँ तक कि समान बुद्धिलब्धि वाले व्यक्तियों में भी सृजनशीलता समान नहीं होती है।

सृजनशील शिक्षक अपने समाज और देश की अमूल्य धरोहर होती है। समाज के उत्थान और विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि प्रत्येक शिक्षक में सृजनात्मक योग्यता का विकास करें, जिससे वे शिक्षा के क्षेत्र में अपने नवीन विचारों एवं रचनात्मक कार्यों से राष्ट्रीय प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। सृजनशील बालक की पहचान स्कूल में ही की जानी चाहिए और उनकी रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में सृजनशील शिक्षकों द्वारा उन्हें हर संभव सुविधाएं दी जानी चाहिए।

सृजनात्मकता का अर्थ

सृजनात्मकता क्या है?

सामान्यतः सृजनात्मकता शब्द का प्रयोग मनुष्य की विशिष्ट योग्यता के लिए किया जाता है। किसी भी कार्य की यह विशिष्ट योग्यता दर्शक के पूर्व अनुभव पर निर्भर करती है कभी–कभी जिसे हम सृजनशील मानते हैं वह केवल औरों से अलग होता है। सृजनतात्मक व्यक्ति की मौलिकता नियत होती है, जो व्यक्ति एक लम्बे समय तक विशिष्टता तथा मौलिकता प्रदर्शित करे उसे सृजनात्मक व्यक्ति कह सकते हैं।

आकांक्षा स्तर

किसी कार्य में अपने अतीत निष्पादन स्तर को जानते हुए उस परिचित कार्य में भावी निष्पादन के जिस स्तर पर पहुँचने की व्यक्ति आशा करता है उसे आकांक्षा स्तर कहते हैं। शैक्षिक आकांक्षा स्तर भविष्य में किसी ऐसे काम को करने के रूप में परिभाषित करता है जिसे कोई व्यक्ति अपने भूतकालीन कार्य को नजर में रखते हुए पूरा करने की सोचता है।

पारिभाषिक शब्दावली

सृजनात्मकता

सृजनात्मकता से अभिप्राय डॉ0 बाकर मेंहदी द्वारा बनाये गये परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांक से है।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर

शैक्षिक आकांक्षा स्तर से अभिप्राय डॉ0 वी0 पी0 शर्मा तथा अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांक से है।

लिंग

लिंग से अभिप्राय आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्र–छात्रा से है।

आधुनिक विद्यालय

आधुनिक विद्यालय से तात्पर्य ऐसे छात्र एवं छात्राएं जो राजकीय आधुनिक विद्यालय में अध्ययन करते हैं।

पराम्परागत विद्यालय

प्रस्तुत अध्ययन में परम्परागत विद्यालय से तात्पर्य ऐसे छात्र एवं छात्राएं जो पराम्परागत रूप से गुरूकुल में रहकर या संस्कृत विद्यालय में अध्ययन करते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

प्रत्येक प्राणी अपने प्रजातीय गुणों के अनुसार सृजनशील होता है। किन्तु मनुष्य अपनी उच्च मानसिक योग्यताओं के कारण अपेक्षाकृत अधिक सृजनशील होता है। सभी मनुष्यों में सृजनात्मकता समान मात्रा में नहीं होती है, कुछ व्यक्ति अधिक सृजनशील होते हैं तथा कुछ कम। प्रत्येक युग, देश, काल आदि में सृजनशील व्यक्ति पाये जाते रहे हैं। इन्हीं सृजनशील व्यक्तियों पर राष्ट्र, तथा समाज की उन्नति तथा उत्थान निर्भर हुआ करता है। सृजनशील व्यक्ति समाज की अमूल्य निधि होते हैं। इसलिए वर्तमान में इनकी विशेष योग्यताओं की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है और उनकी सृजनशीलता के विकास के पूरे–पूरे प्रयास किये जा रहें है।

व्यक्ति का जीवन निर्माण उसके शैक्षिक आकांक्षा से बहुत प्रभावित रहता है। अर्थात् एक व्यक्ति क्या बनने की आकांक्षा रखता है, वह इस दिशा में कितना प्रयास या सफलता प्राप्त करना चाहता है यह सब उस व्यक्ति के आकांक्षा स्तर पर निर्भर करता है। अर्थात् व्यक्ति द्वारा निर्धारित लक्ष्य इससे बहुत प्रभावित होते हैं।

परम्परागत और आधुनिक छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का प्रभाव शिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों पर पड़ता है। दोनों अपने लक्ष्यों के प्रति कितने जागरूक रहते हैं। जो छात्र अधिक सृजनशील होते हैं आमतौर पर उनका आकांक्षा स्तर ऊँचा होता है। क्योंकि सृजनात्मक

आकांक्षा स्तर को निर्धारित और प्रभावित करती है। अतः दोनों में सम्बन्ध पाया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर में क्या अन्तर पाया जाता है। परम्परागत तथा आधुनिक छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर अध्ययन नगण्य है। अतः इस समूह पर अध्ययन की महती आवश्यकता है। सृजनात्मक और आकांक्षा स्तर का सम्बन्ध अनेक अध्ययनों में पाया गया है, किन्तु परम्परागत और आधुनिक छात्रों के सन्दर्भ में अध्ययन नहीं हुए हैं।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध का शीर्षक

"परम्परागत और आधुनिक छात्रों की सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन" करना है।

1. प्रस्तुत अध्ययन में पराम्परागत का तात्पर्य है ऐसे छात्र एवं छात्राएँ जो परम्परागत रूप से गुरूकुल में रहकर या संस्कृत विद्यालय में अध्ययन करते हैं।
2. आधुनिक छात्र से तात्पर्य है कि ऐसे छात्र एवं छात्राएँ जो राजकीय आधुनिक विद्यालय में अध्ययन करते हैं।
3. शैक्षिक आकांक्षा स्तर से तात्पर्य शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी डॉ0 वी0पी0 शर्मा तथा अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली पर प्राप्त प्राप्तांकों से है।
4. सृजनात्मकता का अर्थ एन0सी0ई0आर0टी0 के शिक्षा विभाग के प्रोफेसर डॉ0 बाकर महेंदी द्वारा निर्मित परीक्षण पर प्राप्त अंकों से है। जिसके तीन पक्ष है –
   i. प्रवाह।
   ii. लचीलापन।
   iii. मौलिकता।

इसके साथ–साथ प्रस्तुत अध्ययन में सृजनात्मकता एवं शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित करने वाले कुछ चरों जैसे लिंग, आयु, पिता की व्यावसायिक स्थिति तथा परिवार का आकार आदि को भी लिया गया है।

शोध कार्य के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. परम्परागत तथा आधुनिक छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता के स्तर का अध्ययन करना।
2. परम्परागत तथा आधुनिक छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
3. परम्परागत तथा आधुनिक छात्र–छात्राओं के आयु के मध्य सृजनात्मकता के स्तर का अध्ययन करना।
4. परम्परागत तथा आधुनिक छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता के मध्य पिता के व्यवसायिक स्थिति का अध्ययन करना।
5. परम्परागत तथा आधुनिक छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता के मध्य परिवार का आकार का अध्ययन करना।
6. परम्परागत तथा आधुनिक छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा के मध्य पिता के व्यवसायिक स्थिति का अध्ययन करना।
7. परम्परागत तथा आधुनिक छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य परिवार का आकार का अध्ययन करना।

शोध विषय का सीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन की कुछ सीमाएँ निर्धारित की गई हैं जो निम्नलिखित हैं :–

1. सम्पूर्ण दिल्ली के आधुनिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के स्थान पर सिर्फ दक्षिण दिल्ली के 3 विद्यालयों को लिया गया है।
2. सम्पूर्ण दिल्ली के परम्परागत गुरूकुल और संस्कृत विद्यालयों के स्थान पर सिर्फ दक्षिण दिल्ली के 3 संस्कृत विद्यालयों को लिया गया है।
3. सभी कक्षाओं के छात्रों के स्थान पर केवल आठवीं कक्षा के छात्रों व छात्राओं को लिया गया है।
4. न्यादर्शन में केवल 180 छात्रों को लिया गया है। जिसमें 90 छात्र और 90 छात्राएँ हैं।
5. स्वनिर्मित प्रश्नावली के स्थान पर डॉ0 बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित सृजनात्मकता मापनी परीक्षण तथा डॉ0 श्रीमती अनुराधा गुप्ता एवं डॉ0 वी0पी0 शर्मा द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया गया है ताकि अध्ययन में अधिक वैधता एवं विश्वसनीयता आ सके।
6. सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर से सम्बन्धित कुछ अन्य कारकों जैसे बुद्धि, स्वप्रत्यय आदि को न लेकर केवल 5 कारकों को ही लिया गया है। इस तरह के अध्ययन में साक्षात्कार विधि अधिक उपयोगी होती है किन्तु न्यादर्श का आकार बड़ा होन एवं समय की सीमा होने के कारण सर्वेक्षण अध्ययन विधि को शोधकर्ता द्वारा अपनाया गया है तथा आवश्यकतानुसार साक्षात्कार का विकल्प रखा गया है।

साहित्यावलोकन

मंगल शशि (2013) – ने केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा निष्कर्षतः पाया कि छात्राओं की अपेक्षा, छात्रों की आकांक्षा स्तर उच्च होता है। तथा छात्र एवं छात्राओं के मध्य सृजनात्मकता में अन्तर नहीं पाया गया।

शुक्ला देवेन्द्र (2015) – ने शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा निष्कर्ष के रूप में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि का सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है। छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मकता में अन्तर पाया जाता है, तथा शैक्षिक उपलब्धि छात्र की अपेक्षा छात्राओं में अधिक पायी जाती है।

रहमान आर0बी0 (2017) – ने दिल्ली के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक पर पी0एच0डी0 स्तरीय शोधकार्य किया और शोध के निष्कर्ष में पाया कि –(1) व्यावसायिक आकांक्षा लड़के एवं लड़कियों में समान पाई गई चाहे विद्यालय किसी भी प्रकार का हो। (2) सरकारी विद्यालयों की छात्राओं में एवं सरकारी अनुदानित विद्यालयों के छात्रों में व्यावसायिक आकांक्षा समान पाई

गई। विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान की व्यवसायिक आकांक्षा में समानता पाई गई, परन्तु विज्ञान वर्ग की लड़कियों में अन्य संकायों की लड़कियों की तुलना में व्यावसायिक आकांक्षा उच्च पाई गई।

परिकल्पना

प्रस्तुत अनुसंधान में शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया गया है। जिसे अमान्य अथवा नकारात्मक परिकल्पना भी कहते हैं। ये परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैः–

1. पराम्परागत और आधुनिक छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

1.1 परम्परागत छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

1.2 आधुनिक छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

1.3 परम्परागत छात्राओं और आधुनिक छात्रों के सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

1.4 परम्परागत छात्रा और आधुनिक छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2. परम्परागत और आधुनिक छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2.1 परम्परागत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2.2 आधुनिक छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2.3 परम्परागत छात्र और आधुनिक छात्र के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2.4 परम्परागत छात्र और आधुनिक छात्राअें के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3. कम आयु वर्ग और अधिक आयु वर्ग के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. कम आयु वर्ग और अधिक आयुवर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. छोटे परिवार और बड़े परिवार के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. छोटे परिवार और बड़े परिवार के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
7. पिता का सरकारी व्यवसाय और गैर सरकारी के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
8. पिता का सरकारी व्यवसाय और गैर सरकारी के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्श चयन

प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यायदर्श द्वारा न्यायदर्श चयन तीन स्तरों पर किया गया है। प्रथम स्तर पर दक्षिणी दिल्ली स्थित गुरूकुल संस्कृत विद्यालय तथा राजकीय उच्चतर माध्यमिक बालक एवं बालिका विद्यालयों का चयन किया गया। दूसरे स्तर पर आठवीं कक्षा के एक वर्ग का चयन किया गया। तथा तृतीय स्तर पर छात्र–छात्राओं का चयन कर आँकड़े एकत्रित किए गये। इस प्रकार कुल 6 विद्यालयों में 235 छात्र–छात्राओं को प्रश्नावली दी गई, जिसमें से 180 सही एवं पूर्णरूप से भरी हुई पाई गई।

उपकरण

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर को मापने के लिए निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया –

सृजनात्मकता

सृजनात्मकता परीक्षण हेतु डॉ बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित सृजनात्मक चिंतन का शाब्दिक परीक्षण का प्रयोग किया गया।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर

शैक्षिक आकांक्षा स्तर के परीक्षण हेतु डॉ बी0पी0 शर्मा तथा डॉ अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित ''शैक्षिक आकांक्षा स्तर'' परीक्षण का प्रयोग किया गया।

आँकड़े एकत्र करने की योजना

आँकड़ों का चयन अनुसंधानकर्ता ने विद्यालय की सामान्य परिस्थितियों में छात्र और छात्राओं से कक्षा सम्पर्क द्वारा किया है। जिसमें उनको कक्षा में ही उपयुक्त निर्देश देने के पश्चात् प्रश्नावली वितरित की गई तथा सभी प्रश्नों का उत्तर दे देने के पश्चात् उनसे पुनः वापिस ले ली गई। इस कार्य के लिए सम्बन्धित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से निवेदन कर अध्यापकों की सहायता से प्रश्नावली पूर्ण करने का कार्य किया गया।

आँकड़े विश्लेषण की योजना

सभी विद्यालयों से आँकड़े एकत्रित कर लिए जाने के पश्चात् आंकड़ों की गणना के लिए उनको एक बड़े कागज पर लिख लिया गया, और आवश्यकतानुसार तालिकाएँ बना ली गई तथा निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया–

मध्यमान (MEAN)

$$\sum \frac{FX}{N}$$

मानक विचलन (STANDARD DEVIATION)

$$\text{S.D.} \sqrt{\sum \frac{Fd^2}{N} - (\sum \frac{Fd}{N})^2} \;\; x\, I$$

विचलन की प्रामाणिक त्रुटि (S.E.D.)

$$\text{S.D.} \sqrt{\frac{Q1^2}{N1} + \frac{Q2^2}{N2}}$$

$$= \sqrt{\frac{01^2}{N} + \frac{02^2}{N2}}$$

क्रांतिक निष्पत्ति (C.R.)

$$C.R. = \frac{M1 - M2}{S.E.D.}$$

शोध परिणाम एवं व्याख्या

परम्परागत तथा आधुनिक छात्र और छात्राओं के सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर को जानने के लए चरों के मध्यमानों के मध्य अन्तर प्रमाणिक त्रुटि तथा क्रांतिक निष्पत्ति निकाला गया इससे निम्न परिणाम सामने आए–

1. पराम्परागत छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान 46.37 विचलन 17.17 तथा आधुनिक छात्र–छात्राओं के मध्यमान 46.48 विचलन 17.07 है। दोनों छात्र–छात्राओं के प्रामाणिक त्रुटि 2.55 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 0.043 है जोकि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है।
2. पराम्परागत छात्रों के मध्यमान 48.43 विचलन 18.62 और छात्राओं के मध्यमान 44.31 विचलन 15.73 तथा दोनों छात्र–छात्राओं के प्रामाणिक त्रुटि 3.64 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 1.13 है जोकि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है।
3. आधुनिक छात्रों का मध्यमान 43.32 विचलन, छात्राओं का मध्यमान 49.64 विचलन 18.94 दोनों छात्र–छात्राओं के प्रामाणिक त्रुटि 2.55 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 1.56 है। जो .05 तथा .01 स्तर पर सार्थक नहीं है।
4. पराम्परागत छात्राओं का मध्यमान 43.31 विचलन 15. 73 आधुनिक छात्राओं के मध्यमान 40.32 विचलन 18. 94 तथा दोनों का प्रामाणिक त्रुटि 3.67, क्रांतिक निष्पत्ति 1.33 है जोकि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है।
5. शैक्षिक आकांक्षा स्तर का पराम्परागत छात्र–छात्राओं का मध्यमान 39.72 विचलन 14.45, आधुनिक छात्र–छात्राओं का मध्यमान 49.35, विचलन 15.76 है। दोनों छात्र–छात्राओं के प्रामाणिक त्रुटि 3.25 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 2.99 है जो सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है।
6. शैक्षिक आकांक्षा स्तर पराम्परागत छात्रों का मध्यमान 44.38 विचलन 15.62, छात्राओं के मध्यमान 37.43, विचलन 12.73 है। तथा छात्र–छात्राओं के प्रामाणिक त्रुटि 3.1 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 2.24 है जो .01 स्तर पर सार्थक है।
7. आधुनिक छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का छात्रों का मध्यमान 40.43, विचलन 13.52, तथा छात्राओं का मध्यमान 47.73, विचलन 16.42 है। और प्रामाणिक त्रुटि 3.17 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 2.30 है जो .01 स्तर पर सार्थक है।
8. पराम्परागत तथा आधुनिक छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान क्रमशः 44.38, 40.43 तथा विचलन 15.62, 16.52 है, प्रामाणिक त्रुटि 3.39 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 3.95 है जो .01 स्तर पर सार्थक है।
9. पराम्परागत तथा आधुनिक छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान क्रमशः 37.43, 47.73 तथा विचलन 12.73, 13.42 है, प्रामाणिक त्रुटि 2.61 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 3.94 है जो .01 स्तर पर सार्थक है।
10. कम आयु तथा अधिक आयुवर्ग के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता के मध्यमान विचलन क्रमशः 41.31, 14. 53, 49.83, 15.25, प्रामाणिक त्रुटि 4.09 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 2.10 है जो .05 स्तर पर सार्थक है।
11. कम आयु तथा अधिक आयुवर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान विचलन क्रमशः 49.32, 16.66, और 38.45, 13.29 तथा प्रामाणिक त्रुटि 5.34, क्रांतिक निष्पत्ति 2.03 है जो .05 स्तर पर सार्थक है।
12. छोटा परिवार तथा बड़ा परिवार के छात्र–छात्राओं के मध्यमान विचलन क्रमशः 40.23, 12.39 तथा 46.12, 17.24 है। प्रामाणिक त्रुटि 2.22 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 2.65 है जो .05 स्तर पर सार्थक है।
13. छोटा परिवार तथा बड़ा परिवार के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान विचलन क्रमशः 37.27, 13.44 तथा 43.39, 15.72 है। प्रामाणिक त्रुटि 2.17 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 2.70 है जो .05 स्तर पर सार्थक है।
14. पिता के सरकारी व्यवसाय तथा गैर सरकारी व्यवसाय वाले छात्र–छात्राओं के सृजनात्मकता का मध्यमान विचलन क्रमशः 34.41, 13.21 तथा 39.72, 14.71 है। प्रामाणिक त्रुटि 4.48 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 1.18 है जो सांख्यिकीय स्तर पर सार्थक नहीं है।
15. पिता के सरकारी व्यवसाय तथा गैर सरकारी व्यवसाय वाले छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान तथा विचलन क्रमशः 32.59, 15.92 तथा 37.92, 17.02 है। प्रामाणिक त्रुटि 2.49 तथा क्रांतिक निष्पत्ति 2.14 है जो .01 स्तर पर सार्थक है।

शोध निष्कर्ष

वैज्ञानिक, तकनीकी तथा औद्योगिक विकास के वर्तमान युग में नित नये नूतन आविष्कार हो रहे हैं। इनमें से अधिकांश आविष्कारों के पीछे जहाँ वैज्ञानिकों का अथक प्रयास छिपा है वही उनकी सृजनात्मकता का भी कम योगदान नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष निम्न प्रकार हैः–

1. परम्परागत तथा आधुनिक छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मकता के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं होते हैं अर्थात् दोनों के सृजनात्मकता में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. परम्परागत तथा आधुनिक छात्रों के सृजनात्मकता के मध्य कोई अन्तर नहीं होता है।
3. परम्परागत तथा आधुनिक छात्राओं के सृजनात्मकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. परम्परागत छात्र–छात्राओं के अपेक्षाकृत आधुनिक छात्र–छात्राओं में शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक होता है। परम्परागत छात्राओं के अपेक्षाकृत आधुनिक छात्र–छात्राओं में शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक होता

है। परम्परागत छात्राओं की अपेक्षाकृत छात्रों में शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक होता है।

5. आधुनिक छात्रों के अपेक्षाकृत छात्राओं में शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक होता है। परम्परागत छात्र और आधुनिक छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य कोई अन्तर नहीं होता है।
6. परम्परागत छात्राओं के अपेक्षाकृत आधुनिक छात्राओं में शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक होता है। कम आयु वर्ग वाले छात्रों से अधिक आयु वर्ग वाले अधिक सृजनात्मक होते हैं।
7. छोटे परिवार का आकार तथा बड़ा परिवार के छात्र–छात्राओं में बड़ा परिवार के आकार वाले बच्चे अधिक सृजनशील होते हैं। बड़ा परिवार वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक होता है।
8. पिता के सरकारी व्यवसाय तथा गैर सरकारी व्यवसाय वाले दोनों छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर समान होता है।
9. पिता के गैर सरकारी व्यवसाय वाले छात्रों की अपेक्षा सरकारी व्यवसाय वाले छात्रों की आकांक्षा स्तर अधिक होता है।

निष्कर्ष

आज हमारी शिक्षा का उद्देश्य छात्र में सृजनात्मकता का विकास करना है। छात्रों को प्राथमिक स्तर पर ही सृजनात्मकता को बढ़ावा दिया जाय तथा उनके शैक्षिक आकांक्षा स्तर के विकास में सृजनात्मकता के तत्व को प्राथमिकता दी जाय जिससे छात्रों में एक सृजनशील व्यक्तित्व का विकास संभव हो सके। छात्रों में सृजनशील व्यक्तित्व विकसित करने के लिए पहले शिक्षकों का सृजनशील होना आवश्यक है। शिक्षक में जब सृजनशीलता का गुण पाया जायेगा, तभी छात्रों में इस गुण को विकसित कर सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अस्थाना, विपिन, 1999 मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकन श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा– 2*
2. *माथुर, एस के, 2013, षिक्षा मनोविज्ञान विनो द पुस्तक मंदिर, आगरा*
3. *भार्गव महेश, 1990, आधुनिक मनो वैज्ञानिक एवं मापन, कचहरी, आगरा*
4. *शर्मा रमा एंव मिश्रा एम के, 2009 हिन्दी शिक्षण, अर्जुन पब्लिक शिक्षा हाउस, नई दिल्ली*
5. *सिंह, अरुण कुमार, 2013, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल बनारसी हाउस, दिल्ली*
6. *पाठक, पी.डी. 2009, शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा ।*
7. *सिंह, अरूण कुमार उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान पेज नं–753 से 754*
8. *बुच एम. बी. (1972, 1978), "सेकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन" पृष्ठ 46–52*
9. *गाडनर जे. एस. (1940), "दी वुस ऑफ टर्म लेबल ऑफ एसपीरेशन सायलॉजिकल रिव्यू", पृष्ठ 59–68।*
10. *गोड़ एच.सी. (1973), दिल्ली के विद्यालय के छात्रों की "व्यवसायिक आकांक्षाओं कों प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन", शोध आई. आई टी, न्यू दिल्ली।*
11. *घोष, एच. सी. (1974), किसी भी रचनात्मक आत्मकथा के अध्ययन को भारतीय स्कूलों में परामर्श की पद्धति बनाना, शोध प्रबंध कलकत्ता विष्वविद्यालय।*
12. *ग्रेवाल जे. एस. (1990), "व्यवसायिक वातावरण और शैक्षिक और व्यवसायिक पसंद" नेशनल सॉयकलाजिकल रिव्यू (आगरा)।*
13. *सिंह गुमान साहू (1997) "उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन" पं .रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर।*
14. *ए.बी.जे.ओ. (1970) नाइजिरियन किशोरों का शैक्षणिक एवं व्यवसायिक आकांक्षा का अध्ययन जनरल ऑफ एजुकेशन एण्ड वोकेशनल मेजरमेंण्ट– 462 अगस्त वाल्यूम 4/1 पेज 55–67।*
15. *गुप्ता, एम.पी., गुप्ता, ममता (2009):– शैक्षिक निर्देषन एवं परामर्श, राखी प्रकाशन आगरा।*
16. *खुवेद और खॉन, रहमान (2007) :– दिल्ली के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।*